Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

जगतप्रकाश चतुर्वेदी के काव्य में संवेदना और शिल्प

डॉ. केशव कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग क0मुं0 हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा।

Article Info
Volume 7, Issue 6
Page Number : 94-100

Publication Issue :
November-December-2024

Article History
Accepted : 10 Dec 2024
Published : 20 Dec 2024

शोध सार : जगत प्रकाश चतुर्वेदी के सम्पूर्ण काव्य का अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर हमें ज्ञात होता है कि आपका काव्य विविधतायुक्त है। जहाँ आपने अच्छे गीत एवं नवगीतों की रचना की है। वहीं आपने दोहे लिखकर भी अपनी अद्भुत सृजन क्षमता का परिचय दिया है। आपको रचनाएं संवेदना एवं शिल्प दोनों स्तरों पर पूर्णत: खरा उतरती है। आपने दोनों शैलियों में गीत लिखे––परम्परागत तथा आधुनिक परम्परा में 'नवगीत'। परम्परागत गीतों में जहाँ आपने प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, मानवीय संवेदना को अपनी लेखनी का आधार बनाया है, वहीं नवगीतों में आपने गीत के नवीन शिल्प का निर्वाह करते हुए नए प्रतीक, बिम्ब, उपमान आदि का सटीक एवं सार्थक प्रयोग किया है। शिल्पगत नए प्रयोगों से कवि की भाषा में अभिव्यक्ति की प्रखरता एवं पैनापन देखते ही बनता है।

बीज शब्द : नवगीत, दोहा, गीत, संवेदना।

प्रस्तावना : हिन्दी साहित्य को विशाल एवं गौरवशाली परम्परा रही हैं। इस परम्परा को बहुत से कवि और लेखकों ने अपनी लेखनी के संस्पर्श से निरन्तर आगे बढ़ाया। जगतप्रकाश चतुर्वेदी उसी श्रृंखला की ऐसी सशक्त कड़ी हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से काव्य जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। विभिन्न प्रशासनिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए अपनी काव्य–साधना को निरन्तर आगे बढ़ाते हुए 'दीपवेला', 'उत्तर दीपवेला', 'कछ ओस कुछ किरणें', 'बदली भी धूप भी', 'गाओ वनपाखी' जैसे काव्य संग्रह हिन्दी साहित्य को प्रदान किए।

विचार–विमर्श : जगतप्रकाश चतुर्वेदी के सम्पूर्ण काव्य संग्रहों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि आपने काव्य की विभिन्न विधाओं कविता, गीत, दोहे, नवगीत आदि में सफलतापूर्वक अपनी लेखनी जलायी, किन्तु आपका प्रिय प्रतिपाद्य मूलत: गीत ही है। इसीलिए आपके गीतों के सम्बन्ध में डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा–"ये गीत गेय हैं और इसलिए उन बहुत से गीतों से भिन्न हैं जो गाने के लिए नहीं लिखे जाते। इनमें कवित्व भी है और इसलिए उन बहुत सी कविताओं से भिन्न हैं, जिनमें कवित्व नहीं होता।"[1] शांतिप्रिय द्विवेदी ने इन गीतों को "मेघ श्यामल और विद्युत–ज्योतित गीत"[2] कहा था।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

हिंदी साहित्य में दोहा लेखन को लम्बी परम्परा रही है। कवि ने अपने दोहों में कम से कम शब्दों में गंभीर से गंभीर बात कह दी है। उन्होंने दोहों के माध्यम से भी मानवीय संवेदना, प्राकृतिक चित्रण, आध्यात्मिक चन्तन की अभिव्यक्ति की है। कवि के शब्दों में–"जहाँ तक मेरे दाहों की बात है एक गीतकार के नाते मैंने अपने दोहों में गीत की ही आत्मा प्रस्थापित करने का प्रयास किया है। अधिकांश दोहे प्रकृति मुख्यत: पावस से प्रेरणा ग्रहण करते हैं और शेष एक प्रौढ़ मन के चिन्तन और रुझान को अभिव्यक्ति देते हैं। मैंने ब्रजभाषा की अस्मिता खड़ी बोली में भी जीवित रखने की चेष्टा की है; जिससे उनके जन्म की गंध बनी रहे।"[3]

जगतप्रकाश चतुर्वेदी के अधिकांश प्रारम्भिक गीत छायावादी शैली तथा विशेष रूप से छायावादी कवि पंत जी से प्रभावित दृष्टिगत होते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने काव्य संग्रह 'बदली भी धूप भी' में अधिकांश गीत प्रकृक्ति को आलम्बन एवं उद्दीपन मानते हुए लिखे हैं। आपने मानवीय, नारीगत, प्रेम, प्रक्ति एवं अन्य संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देने का सफल प्रयत्न किया है। मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करते हुए वे लिखते हैं–

"सुखा नदियों के नयनों में नीर है,
आज प्यास के मन में कितनी पीर है।
देख रही हैं भटकी आँखें व्योम को,
कुक रहा वह कोई मोर अधीर है।"[4]

आपने प्रकृति के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को पूर्ण सफलता के साथ उद्घाटित किया है। वे लिखते हैं––

"नभ के आंचल से छूट सितारे बिखर चले
स्वर्गगा के सित बिन्दु धरा पर आज ढले
दामिनी साँझ का दिया घनों में जला रही
तृण–तृण पर झर–झर ओस सी बरसात हुई। "[5]

कवि ने मानवीय दर्द को चित्रित करने का प्रयास किया है। वे लिखते हैं–

"न निकलो चाँद पल भर
घटाएं खोल हंस कर
बता दो आज पूनम को
किसी की जोति झिलमिलाई है।" [6]

कवि ने मानव जीवन की विसंगतियों का चित्रण करते हुए कवि ने लिखा––

"धुले धुले वृक्ष और वुझे बुझे चेहरे
प्रकृति और पुरुष के मानदण्ड दुहरे।"[7]

कवि ने नारीगत संवेदना को विभिन्न कोणों से नवीन प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। जैसे–'कुंकुम का उदास होना', 'आंगन की मेंहदी का रोना' आदि। नारी मन की संवेदनशीलता को अभिव्ययत करते हुए ये लिखते हैं––

"मिट्टी उगायेंगी झुमरें, कुंकुम उदासै न हो।
खोदेंगी धरती हथेलियाँ, आँगन की मेंहदी न रो।"[8]

कवि जगतप्रकाश के अधिकांश गीत प्रेम एवं श्रृंगार की भावना से ओत–प्रोत हैं। उन्होंने विभिन्न प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से आपने अपनी अभिव्यक्ति को और प्रखर बनाया है। बाबू गुलाबराय के शब्दों में–– "ये गीत अधिकांश पावस और प्रेम के हैं। उनमें पावस की सी आर्द्रता और सरसता तथा प्रेम का सा माधुर्य है। चतुर्वेदी जी के गीतों की भाषा स्वभावत: सरल तथा श्रुति मधुर है। मुझे आशा है कि उनके गीतों का अपने नैसर्गिक गुणों के कारण हिन्दी साहित्य में अपना स्थान होगा। "[9]
वे लिखते हैं––
"पवन झकोरों से कह कह कर नित भेजे उर के आमंत्रण
मेघों के कर में भर भर कर भेजे निज नयनों के जलकण
घन की बूँद वद में मैंने प्रिय, कितने संदेश पठाये।
पर मेरे आराध्य न आये।"[10]
प्रेमानुभूति की घनीभूत तीव्रता को महसूस कर कवि मन बरबस ही बेचैन होने लगता है। तब वह दूसरों के दर्द को भी अपना दर्द समझने लगता है। अत: कवि ने लिखा है–
"एक तरी ही नहीं और भी बातें हैं बहुत
जोकि रह–रह मुझे ग़मगीन किया करती हैं
आदमी का ही दरद आदमी को मालूम नहीं
कितनी साँसें बिन जिन्दगी के जिया करती हैं।"[11]
इसी प्रकार प्रियतम के दूर होने पर कवि–मन बेचैन हो उठा और उन्होंने लिखा–
"सावन सूना सा–लगे, दामिनि लगे उदास।
रोने–रोने को घटा, आज न तुम भी पास।।"[12]
कवि ने प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने काव्य में मुखरता प्रदान की है। आपने प्रकृति के विभिन्न रूपों को पूर्ण तन्मयता से चित्रित किया है। प्रकृति का सौन्दर्य चित्रण करते हुए कवि ने लिखा–
"बिजली का ज्योति कलश
रंगोली इन्द्र धनुष बिखरी ज्यों दीप–धूप
स्याह स्याह बादरियाँ।।" [13]
"बरसो, सूनी रजनी का पल भीग उठे
बरसो, नयनों को छूकर अंचल भीग उठे
ज्योत्स्ना सा विद्युत छोर, अनु ये छू जाये।" [14]

सावन के महीने में छायी काली काली घटाओं को देखकर कवि का मन आह्लादित हो जाता है। अत: कवि ने प्रकृति की उस सुषमा को चित्रित करते हुए लिखा है--

"बुझ गया चाँद का दिया, धूप से मेघ चले
आँधी में प्रिय कैसे अब अपना दीप जले
जल-जल कर विद्युत-ज्योति पवन में वुझ जाती
ज्योत्स्ने, वीते यों आज कितने पखवारे
छाये पावस के मेघ कारे कजरारे!"[15]

+

"जाते आशा से मेघ
मुख पर हास लिए, मन में पीर लिए!
ये घिर-घिर आये मेघ,
उर में आग लिए, दृग में नीर लिये! "[16]

भीषण गर्मी का चित्र अंकित करते हुए कवि ने लिखा--

"नदियों में आग बही, जलते अंगारे,
बरसा न पानी बरसे अंगारे
फसल नहीं आ पाई द्वारे ! "[17]

कवि ने जहाँ एक ओर वर्षा के सौन्दर्य का वर्णन किया है, वहीं बरसात के पश्चात् मेंड़ पर चलती चीटों की यांति, बड़ी-बड़ी घास, राखी तथा भुंजरियों का मनोरम चित्र अंकित करते हुए लिखा हैं--

"चीटों की यह पांति मेंड़ पर जा रही
खड़ी डगर पर घास लहर लहरा रही।
हरी दूब की सखियों से,
राखी और भुजरियों से
लौट चली बरसात रे, लौट चली बरसात! "[18]

कवि ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का चित्रण अपने दोहों में किया है। कहीं प्रात: कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य, कहीं सूखा, कहीं प्राकृतिक असमानता को उन्होंने अपने ढंग से रूपायित किया है। कवि ने वृक्षों का उदात्तता का चित्रण सहज रूप से करते हुए लिखा है--

"देते सबको फूल-फल, देते सबको छाँह।
जाति-पांति जाने बिना, फैलाते हो बांह।।"[19]

इन पंक्तियों में कवि ने कबीर के समान उदात्त चिन्तन का परिचय दिया। कवि कभी–कभी प्रक्ति के अद्भुत सौन्दर्य पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए लिखते हैं––

"जुगनू बैठा वस्त्र पर, फिर भी लगे न आग।
जलता रहता आप ही, पड़े न कोई दाग।।"[20]

कवि अपने समसामयिक वातावरण के प्रति पूरी तरह से जागरूक प्रतीत होता है। इसीलिए उन्होंने भारत पर चीनी आक्रमण के समय अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए लिखा––

"सृजन का आज कण है,
बुलाता किन्तु रण है
हिमालय पर बढ़ा जो पांव
अब रुकने न पाये।"[21]

गोवा का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रमुख स्थान रहा है। अत: कवि ने गोवा संघर्ष का स्मरण करके गर्व से लिखा––

"लोहू से लथपथ हंसी बुलाती आओ तुम,
जाती जाती जिन्दगी बुलाती आओ तुम
मरघट पर उठता धुआँ चुनौती तुमको देता है
गोआ के माथे उसी राख से तिलक लगाओ रे।। [22]

उक्त पंक्तियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि की राष्ट्रीय चेतना अत्यन्त प्रयार है। कवि ने देश सैनिक एवं किसान का आह्वान करते हुए, लिखा–

"भर लो अपनी नींव की, जैसे मांग भरे कोई।
माटी की मुस्कान दो, जैसे दीप धरे कोई ।।"[23]

कवि ने अपने काव्य में आध्यात्मिक चिन्तन, जीवन के यथार्थ तथा सांसारिक नश्वरता को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। उन्होंने लिखा है––

"मन का वन मुरझा गया, बाहर बरखा होय।
घट के भीतर छाछ ज्यों, कोई रहा बिलोय।।"[24]

कवि ने जीवन की नश्वरता के सम्बन्ध में नए ढंग से अपनी बात कही है। वे जीवन को एक प्लेटफार्म की तरह मानते हैं। अत: वे लिखते हैं––

"प्लेटफार्म से अधिक रे, मत दुनिया को मान।
पल भर में मेला जुड़े, पल में होय मसान।।"[25]

कवि मानते हैं कि जीवन में न कोई बड़ा है और न छोटा, सभी का अपना अलग महत्त्व है। इसलिए कभी किती को अपने बड़प्पन तथा दूसरे की लघुता पर विचार नहीं करना चाहिए। इसीलिए उन्होंने लिखा–

"मैं तो नन्हीं दूब हूँ, तुम गुलर के फूल।
कैसे पाऊँ मैं तुम्हें, छोड़े मुझे न धूल ।।"[26]

कवि जगतप्रकाश चतर्वेदी के काव्य का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि आपका काव्य प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, गीतात्मकता एवं चित्रोपमता जैसी विशिष्टताओं से युक्त है। कवि ने अधिकांशत: अभिधा, किन्तु कहीं कहीं लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग भी किया गया है। कहाँ कहाँ तुकान्त का निर्वाह ठीक प्रतीत नहीं होता है। आपकी भाषा सीधी व सरल है। मुहावरे तथा लोकोक्तियों का यथास्थान प्रयोग किया गया है। आपके काव्य में गीतात्मकता देखते हो चनती है

'लहरों में जाती नही पीउ–पीउ
री बोले पपीहा कहाँ पीउ–पीउ "[27]

डॉ रामविलास शर्मा ने जगतप्रकाश चतुर्वेदी के सम्बन्ध में लिखा है कि–"जगत प्रकाश का प्रकृति दर्शन मनोहर है, चित्रण मनोरम है। उनकी भाषा सरल और शिल्प प्रवाहपूर्ण है। गीत पढ़कर गुनगुनाने को जी चाहता है। इन गीतों का यधेष्ठ आदर हिन्दी में होना ही चाहिए।"[28]

निष्कर्ष : इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कवि जगतप्रकाश चतुर्वेदी जी का काव्य संवेदना एवं शिल्प दोनों स्तरों पर सुगठित एवं सुवासित प्रतीत होता है। आपके गीत, नवगीत एवं दोहों की मुखरता देखते ही बनती है। आपकी सभी रचनाओं में संवेदना एवं शिल्प दोनों स्तरों पर विविधता एवं नवीनता दृष्टिगोचर होती है और अधिकांश कविताएं नई जमीन तोड़ती नज़र आती हैं। अपने मन की निश्चछलता को आपने कागज पर उकेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। अत: उनका काव्य संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर
उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

संदर्भ :

1. जगत प्रकाश चतुर्वेदी, 'बदली भी धूप भी' के परिशिष्ट से उद्धृत।
2. परिशिष्ट से उद्धत।
3. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'सप्तपदी–IV', पृ0 वक्तव्य से उद्धत।
4. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'भदली भी, धूप भी', 'आपादस्य प्रथम दिवसे, पृ0 1
5. वहीं, 'बदली भी, धूप भी', 'दिन की रात हुई, पृ0 15
6. वही, 'बदली भी, धूप भी', 'किसी की आंख डबडबाई है', पृ॰ 12
7. वही, 'बदली भी, धूप भी', 'टूटे तटबन्ध', 0 33

8. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'बदली भी चूप भी", पृ00
9. बाबू गुलाबराय, 'बदली भी धूप भी', 0
10. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'गाओ बन पाखी', 'पर मेरे आराध्य न आये', पृ08
11. जगत प्रकाश चतुर्वेदी, गाओ वनपारखी, 'बह गीत में गा माता हूँ', पृ0 20
12. जगतप्रकाश, 'सप्तपदी–IV, पृ.20
13. वही, 21
14. वही, 22
15. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'छाये पावस के मेघ, पृ0 14
16. वही, 'ये विर–घिर आए मेघ', पृ0 16
17. वही, 'बरसे अंगारे, पृ0 31
18. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'लौट चली बारात, पृ0 44
19. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'सप्तपदी–IV', पृ0 24
20. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'सप्तपदी–IV', 0 25
21. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'चीनी आक्रमण पर', पृ0 35
22. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'गोवा संघर्ष के प्रथम दिन',पृ0 37
23. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'धरती तुम्हे पुकारती', पृ0 38
24. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'सप्तपदी–IV', पृ0 2
25. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'सप्तपदी–IV', 0 27
26. जगतप्रकाश चतुर्वेदी, 'सप्तपदी–IV', पृ0 26
27. जयप्रकाश चतुर्वेदी, बदली भी, धूप भी, री बोले पपीता, पृ.20
28. प्रकाश चतुर्वेदी, बदली भी, धूप भी, के फ्लैट से उद्धृत।